NJESR/August-2022/Volume-4/issue-8 E-ISSN2582-5836

DOI-10.53571/NJESR.2022.4.8.1-4

# भारतीय दर्शन का पर्यावरण पर प्रभाव

अरुण कुमार

शोधार्थी लोक प्रशासन विभाग

वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय,

आरा बिहार

(Received 11 July 2022/Revised 20 July 2022/Accepted 05 August 2022/Published 15 August 2022)

भारतीय दर्शन एक प्राचीन दर्शन है, और इस दर्शन के बारे में अध्ययन करने पर पता चलता है कि भारत में सभी प्रकार के जीव-जन्तुयों तथा पेड़-पौधों को समान रूप से रहने का अधिकार है। इसलिय हमें किसी भी प्राणी तथा पेड़-पौधों को नुकसान नहीं पहुँचान चाहिए। ये सभी हमारे पर्यावरण के लिए महत्वपूर्ण अंग है अगर इनको नुकसान पहुँचाया जाता है तो इसका प्रत्यक्ष प्रभाव मानव जीवन पर तथा पेड़-पौधों पर पड़ता है। इसलिय पर्यावरण का संरक्षण करना हमारा कर्तव्य है।

हिन्दू मान्यताओं के अनुसार प्रकृति एवं पुरुष के संयोग से ही जीवन विकसित हुआ है और ये दोनों पर्यावरण के महत्वपूर्ण भाग है। सबसे पहले पर्यावरण का अर्थ जानना आवश्यक है- यह दो शब्दों के संयोग से बना है। परि+आवरण जहां परि का अर्थ है घेरा तथा आवरण का अर्थ है चारों तरफ अर्थात् हमारे चारों तरफ के घेरा को ही पर्यावरण कहते है। पर्यावरण हम सभी के लिए बहुत ही आवश्यक है, इसलिए इसकी रक्षा तथा संरक्षण करना हम सभी का कर्तव्य है। इसलिए प्रत्येक वर्ष 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है तथा जुलाई के प्रथम सप्ताह में प्रत्येक वर्ष वन महोत्सव मनाया जाता है। यहाँ वन महोत्सव मनाने का आश्रय यह है की लोगों की बीच पेड़-पौधों के प्रति जागरूकता बढ़े और अधिक से अधिक पेड़-पौधा लगाएं। वर्तमान में जिस प्रकार से मनुष्य पर्यावरण को नुकसान पहुँचा रहा है उससे आने वाले समय में मनुष्य के ही ऊपर अती विनाशकारी प्रभाव पड़ेगा। कभी-कभी प्राकृतिक क्रियाकलापों के कारण प्रकृति चक्र अचानक टूटते है जिससे पर्यावरण असंतुलित होता है और इसका प्रभाव सभी प्राणियों पर पड़ता है। अगर भारतीय दर्शन को देखा जी तो यहाँ पर पेड़-पौधों को तथा जीव-जन्तुयों को देवता के रूप मानकर पूजा किया जाता है। इसलिए हमें भारतीय दर्शन का चिंतन करते हुए पर्यावरण का संरक्षण करने का अधिक से अधिक प्रयास करना चाहिए।प्रकृति के इस आवरण के अंदर पेड़-पौधे, जीव-जन्तु, घास के मैदान, बर्फ के पहाड़, हिमनद, समुद्र आदि आते है। इस आवरण से प्रकृति सुंदर, हरी-भरी और मनमोहक लगती है। रामायण

में भगवान लक्ष्मण को जब मेघनाद का वाण लगा था तो उस समय हनुमान जी के द्वरा सुसैन वैद्य को लाया गया और वैद्य जी प्रकृति के अंदर विद्यमन जड़ी-बूटियों की सहायता से लक्ष्मण जी को पुनः जीवन प्रदान किए थे। आज भी गाँवों में इस प्रकार का क्रियाकलाप प्रचलित है। क्योंकि जब किसी को बीछू डंक मारता है तो तुरंत उसका उपचार जड़ी-बूटीयों के माध्यम से ही किया जाता है और उसका प्रभाव उस व्यक्ति पर तत्काल प्रभाव से देखा जाता है की वह व्यक्ति जल्द ही स्वस्थ हो जाता है। इस प्रकार हमें अपने पर्यावरण का देखभाल करना चाहिए। तथा एक जिम्मेदार नागरिक होने के नाते इसकी रक्षा करनी चाहिए। गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है कि अश्व्थ: सर्ववृक्षणाम अर्थात् वृक्षों में भी जीवन है। मत्स्य पुराण में पेड़ों को पुत्रों की संख्या में निहित करना पेड़ों के महत्व को स्पष्ट करता है। भारतीय दर्शन में नीम को पूर्ण चिकित्सक, आंवले को पूर्ण भोजन, पीपल को शुद्ध वायुदात्री, पाकड़ और वट के युग्म वृक्षों को जल संग्राहक एवं वट को पूर्ण घर मन गया है। प्राचीन एवं प्राकृतिक संस्कृति को जानने के साथ-साथ विभिन्न अवसरों पर आॉवला, नीम, पीपल, बरगद, बाँस, केला, तथा तुलसी के पौधे की पूजा तथा जानवरों में गाय, कुता, चिड़ियों तथा कौवों आदि को खाना खिलाना हमारी संस्कृति का अंग बन गया है। यही नहीं सम्पूर्ण भारत में प्रत्येक वर्ष नागपञ्चमी के अवसर पर सर्प को दूध पिलाया जाता है।

विज्ञान के विभिन्न महत्वपूर्ण ज्ञान को जीवन में उतरना भी भारतीय दर्शन का मुख्य उद्देश्य है। खस गीस की दक्षिण एवं पूर्व दिशा की तरफ सिर करके सोना, सूर्य नमस्कार, ध्यान, योग, पूजा द्वारा अपनी मानसिक शक्ति को दृढ करना आदि ऐसे तमाम क्रियाकलापों को जीवन का अंग माना जाता गया है। जिससे लोग कम से कम बीमारी का शिकार हो और समाज स्वस्थ रहे। वर्तमान भौतिकवादी काल में जहां लोग अत्यधिक सुख सुविधाओं की तरफ आकर्षित हो रहे है जिसका स्वास्थ पर बुरा असर पड़ रहा है और लोग चिकित्सा की तरफ भाग रहे है। इससे बचने के लिए हम सभी को प्रकृति से प्रेम और उनका संरक्षण करना होगा। जिससे पर्यावरण का संतुलन बना रहे। इसके लिए प्रत्येक वर्ष जुलाई महिने के प्रथम सप्ताह में वन महोत्सव के रूप में मनाया जाता है। वन महोत्सव में प्रत्येक नागरिक को बढ़-चढ़ कर भाग लेना चाहिए और सभी को कम से कम एक पेड़ अवश्य लगाना चाहिए जिससे हमारी प्रकृति सुंदर, स्वच्छ और खुशहाल बन सके। लेकिन ऐसे लोगों की संख्या बहुत ही कम है जो अपनी भौतिकवादी सुख, सुविधाओं को छोड़कर पर्यावरण की तरफ ध्यान देता हो। पर्यावरण से हमें अनेकों लाभ मिलता है जैसे :- जीने के लिए शुद्ध वायु, खाने के लिए भोजन, जानवरों को रहने के लिए आवास, बिना किसी भेद-भाव के प्रकृति द्वारा हम सभी को प्राप्त है। इसलिए प्रकृति की संरक्षण करना हम सभी की जिम्मेदारी ही नहीं बल्कि कर्तव्य भी हैं। जिससे प्रकृति का कम से कम दुरुपयोग हो।

भगवान दंतात्रेय के 24 गुरुओं मरण 11 पशु-पक्षी, 5 मनुष्य, 5 प्रकृति के पंचतत्व तथा समुन्द्र, सूर्य और चंद्रमा थे। इसी कारण 'वसुधैव कुटुंम्बकम्' हिन्दू दर्शन का महत्वपूर्ण अंग है। जिसका भावार्थ है कि सम्पूर्ण विश्व हमारा परिवार है। पर्यावरण दर्शन 1970 के दशक में पर्यावरण दर्शन के रूप में एक शाखा के रूप में उभरा। प्रारंम्भिक पर्यावरण दार्शनिकों में रिचर्ड राउतली, आर्ने नेस और जे वेयर्ड कैलिकर्ता शामिल है। वर्तमान भौतिकवादी कल में मानव द्वारा अपनी सुख सुविधा के लिए जिस प्रकार से पौधो की कटाई की जा रही है उससे आने वाके समय में मानव को अनेकों समस्याओं को सामना करना पड़ेगा। जैसे की आॉक्सीजन, फल, पुष्प, जड़ी-बूटी, जानवरों कर लिए आवास, मृदाक्षरण, जलवायु परिवर्तन आदि। इसलिए भारतीय दर्शन के अनुसार बताएं गएं मार्ग पर चलते हुए हमें पर्यावरण का संरक्षण करना चाहिए तथा पेड़-पौधों एवं जानवरों को देवता मानकर पूजा करनी चाहिए। आज विश्व का कोई ऐसा देश नहीं हैं जो पर्यावरण संकट से नहीं गुजर रहा हो। उन देशों में से भारत भी जो अत्यंत ही पर्यावरण के प्रति चिंतित सवेदनशील है और इसके लिए साकरात्मक प्रयास भी कर रहा है। जहाँ दुसरे देश भौतिक चकाचौंध के लिए अपना सबकुछ लूटा चुके है, वहीं भारत के पास आज भी बहुत कुछ विरासत के रूप में बचा हैं। पश्चिम के देशों ने प्रकृति को हद से ज्यादा नुकसान पहुंचाया है उन देशों में प्रकृति को नुकसान पहुँचने से रोकने के लिए मजबूत आधार नहीं थी जिसका परिणाम आज उन देशों को भी झेलना पड़ रहा है। प्रकृति संरक्षण का कोई संस्कार अखंड भारत भूमि को छोड़कर अन्यत्र देखने को नहीं मिलता हैं। जबकि भारतीय दर्शन में प्रकृति संरक्षण के सूत्र मौजूद है, हिन्दू धर्म में प्रकृति पूजन को प्रकृति संरक्षण के तौर पर मान्यता है। भारत में पेड़-पौधों, नदी-पर्वत, ग्रह-नक्षत्र, अग्नि-वायु सहित प्रकृति के विभिन्न रूपों कर साथ मानवीय रिश्ते जोड़े गए है, पेड़ की तुलना संतान से की गई है तो नदी को माँ स्वरूप माना गया है। ग्रह-नक्षत्र, पहाड़ और वायु देवरूप माने गए है। यह सब होने के बाद भी भारत में भौतिक विकास की अंधी दौड़ में प्रकृति का पूजा-अर्चना प्रचलित हुई। लेकिन यह भी सच है की यदि ये परंपराएं न होती तो भारत की स्तिथि भी गहरें संकट के किनारे खड़े किसी पश्चिम देश की तरह होती। हिन्दू परंपरा ने कहीं ना कहीं प्रकृति का रक्षा करने का कार्य किया हैं। हिन्दू धर्म का प्रकृति के साथ कितना घर रिश्ता है इसे इस बात से समझ जा सकता है कि दुनिया के सबसे प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद का प्रथम मंत्र ही अग्नि के स्तुति में रचा गया है। हमारे ऋषि-मुनि जानते थर कि पृथ्वी का आधार जल और जंगल है, इसलिए उन्होंने पृथ्वी की रक्षा के लिए वृक्ष और जल को महत्वपूर्ण मानते हुए - 'वृक्षाद् वर्षति पर्जन्य: पर्जन्यादन्न संभव' अर्थात वृक्ष जल है, जल अन्न है, अन्न जीवन है। जंगल को हमारे ऋषि-मुनि आनंददायक कहते है- 'अरण्यं ते पृथिवी स्योनमस्तू' यही कारण है की हिन्दू जीवन के चार महत्वपूर्ण आश्रमों में ब्रम्हचर्य, वानप्रथ और सन्यास का सीधा संबंध वनों से ही है। सम्राट विक्रमादित्य और अशोक के शासन काल में वन की रक्षा सर्वोपरि थी। चाणक्य ने भी आदर्श शासन व्यवस्था में अनिवार्य रूप से अरण्यपालों की नियुक्ति करने की बात कही है।

हिन्दू दर्शन में एक वृक्ष को मनुष्य के दस पुत्रों से तुलना की गई है- दशकूप समावापी: दशवापी समोह्रदहः। दशह्रदह समः पुत्रों दशपत्र समोद्रुमः। हिन्दू घरों में तुलसी का पौधा लगाने का कारण सिद्ध हो गया है की तुलसी का पौधा मनुष्य को सबसे अधिक प्राणवायु देता है, तुलसी के पौधे में अनेक औषधीय गुण भी मौजूद है। पीपल को भी देवता मानकर पूजा नियमित इसलिए की जाती है क्योंकि वह भी अधिक मात्रा में आॉक्सीजन देता है।

सिंधु सभ्यता की मोहरों पर पशुओं एवं वृक्षों का अंकन सम्राटों द्वारा अपने राजचिन्ह के रूप में वृक्षों एवं पशुओं को स्थान देना, गुप्त सम्राटों द्वारा बाज को पूज्य मानना, मार्गों में वृक्ष लगवाना, कुएं खुदवाना, दूसरे प्रदेशों से वृक्ष मगवाना आदि तात्कालिक प्रयास पर्यावरण प्रेम को प्रदर्शित करता है। वैदिक ऋषि-मुनि प्रार्थना करते है कि पृथ्वी, जल, औषधी एवं वनस्पतियाँ शांतिप्रद हो। ये शांतिप्रद तभी हो सकते है जब इनका प्रत्येक स्तर पर संरक्षण करें।

## निष्कर्ष

भारतीय दर्शन का पर्यावरण पर प्रभाव को देखते हुए कहा गया है की हमारे पर्यावरण में आवश्यकता को पूरा करने के लिए वो सारी चीजें उपलब्ध है लेकिन हमारी लालच का पूरा करने के लिए नहीं। पर्यावरण मानव जीवन के लिए एक विशेष उपहार है जहाँ पर्यावरण देश का धरोहर है। इसलिए हम सभी को प्रयास करना चाहिए कि 'वसुधैव कुटुंम्बकम' को चिरतार्थ करते हुए सम्पूर्ण विश्व को अपना मानकर पर्यावरण के प्रति सजग, सतर्क सवेदनशील रहना चाहिए, और प्रयास करें की पर्यावरण को कम से कम नुकसान हो।

## संदर्भ


1. Vyas N.J. (1996) Nature and Man: A Revision in relationship Eco-philosophy and Eco-dharma, Indian Institute of Ecology and Environment ISBN-81-7456-053-XPP.176-181
2. Sri Aurobindo (2003) Isa Upanishad, Valume-17
3. JP Reser, JM Bentrupperbaumer-journal of environment psychology, 2005.
4. S patel-drsrjournal.com